Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:4.081
Volume-12, Issue-4, March-2019 www.researchguru.net

भारत मे बेरोजगारों का मेला

Dr. Rakshit M. Bagde
Assistant Professor, Dept of Economics, RTM Nagpur University,
Nagpur Maharashtra 440010 rakshitbagde@gmail.com

प्रस्तावना –

प्रत्येक देश मे बेरोजगारी का होना एक सामान्य बात है, भले ही वह कीतनी भी विकसीत अर्थव्यवस्था हो। परंतु असामान्य तरीके से और निरंतर बेरोजगारी का बढना अर्थव्यवस्था और देश के आर्थिक विकास के लिये हानिकारक होता है। बेरोजगारी की समस्या व्यक्ती और समाज में हिन भावना निर्माण करती है. इससे समाज की प्रगती बाधीत होती है। आज विश्व के प्रत्येक देश को बेरोजगारी का सामना करना पड राहा है। प्रस्तुत शोध निबंध मे भारत मे बढती हुयी बेरोजगारी तथा उसका विकास पस प्रभाव का अध्ययण किया गया है।

शब्द कुंजी – भारत, बेरोजगारी, विकास

भारत एक ऐसा देश है, जो अपनी स्वतंत्रता से ही बेरोजगारी से जुझ रहा है। एक व्यक्ती जो कार्य करने के लिए योग्य तथा तत्पर है लेकीन वह कार्यविहीन है,को बेरोजगारी के रूप मे परिभाषीत कर सकते है। भारतीय परिपेक्ष मे बेरोजगारी देश मे भयंकर गरिबी को जन्म दे रही है। भारतीय बेरोजगारी एक सामाजिक-आर्थिक समस्या बन रही है जो आधुनिक काल मे अपना उग्र रूप धारण किए हुये है।

बरोजगारी के लिऐ अनेक कारण जिम्मेदार बताये जा सकते है। भारत मे हो रहा अंधाधुंद मशिनीकरन, बढती हुयी जनसंख्या, गिरता हुवा विकास दर, अशिक्षा तथा जातीव्यवस्था इनमे प्रमुख कारण बताये जा सकते है.।

परिभाषा –

बेरोजगारी उन विवादास्पत शब्दो मे से एक है, जिसका प्रयोग सामान्य व्यक्ति करते है, तथा जिसके सामान्य अर्थ से लगभग सभी व्यक्ति परिचीत है।

प्रो. पीगु के अनुसार- "बेरोजगार केवल वह व्यक्ति होता है, जो काम करने की ईच्छा रखता है, परंतु काम न मिलने के कारण बेरोजगार है।"

दांडेकर एव रथ के अनुसार- "यदि व्यक्ति अपनी आय से जिवीत रहने के लिए आवश्यक कैलरी उर्जा तथा प्रोटीन नही जुटा पाता, तो वह बेरोजगार है।"

संशोधन साहित्य का अवलोकन –

Sen A.K. (1973) – "Employment, Technology and Development" इस कीताब मे संस्थानो, प्रोद्योगिकी और रोजगार के बिच आंतर संबंधो पर ध्यान आकर्षीत कीया है। उत्पादन के तरीके, स्वामीत्व के पैटर्न और रोजगार व्यवस्था का अध्ययन इसके प्रमुख बिंदु है।

Abraham vinoj (2017) – "Stagnant employment Growth" इस संशोधन लेख के माध्यम से भारतीय श्रम ब्युरो के आंकडो के आधार पर भारतीय बेरोजगारी मे आ रही बढोत्तरी का विश्लेषण कीया गया है।

बेरोजगारी बढने के कारण –

1) विकास की धिमी गती –

भारतीय अर्थव्यवस्था तीन स्तरो मे बटी हुयी है। इन तीनों क्षेत्रों का विकास ही अर्थव्यवस्था की प्रगती को दर्शाता है। अर्थव्यवस्था के विकास की गती को सकल घरेलु उत्पाद के आधार पर मापा जाता है।

वर्ष	स.घ.उ. %
2017	6.68
2016	7.11
2015	8.16
2014	7.14

यहा वर्ष 2017 मे GDP मे आयी कमी बेरोजगारी को बढावा दे रही है।

2) जनसंख्या वृद्धी –

भारत मे निरंतर बढती हुयी जनसंख्या बेरोजगारी मे इजाफा कर रही है. भारत मे प्रतीवर्ष 1.30 करोड की दर से बढकर आज 1,36,09,19,900 करोड हो चुकी है। बढी हुयी जनसंख्या के लिये रोजगार के अवसर निर्माण करने मे सरकार असमर्थ दिखायी दे रही है।

3) तांत्रीक प्रगती –

भारत मे औद्योगिक स्तर पर हो रहा आधुनिकीकरण तथा नविन उपकरणों का बढता हुआ उपयोग बढती हुयी श्रमशक्ती को काम से बेदखल कर रही है।

4) शिक्षा प्रणाली –

भारत मे आज भी विश्वविद्यालय स्तर तक पारंपारीक शिक्षा प्रणाली मौजुद है। जिसकी वजह से रोजगारपुरक शिक्षा के अवसर निर्माण न होना बेरोजगारी मे बढावा दे रहे है।

5) लघु उद्योगो का पतन –

वैश्विकरण की निती का देश मे बडे पुरजोर तरीके से समर्थन कीया गया। जिसमे बडे उद्योगोके विकास की और ध्यान दिया गया। जिस कारण लघु और छोटे उद्योगोका पतन हो गया, जो की देश मे रोजगार निर्माण करने मे ज्यादा सक्षम थे।

6) दोषपुर्ण आर्थिक नियोजन –

सन 1951 से लेकर आज तक देश ने 13 पंचवार्षीक योजनाये पुरी की है। इन सभी योजना मे आर्थीक नियोजन का अभाव देखा गया है। जिसका सिधा असर देश की अर्थव्यवस्था पर पडा है। नियोजनकारो ने रोजगार बढाने के अवसरोपर ध्यान नही देने से बेरोजगारी मे वृद्धी देखी जा सकती है।

बेरोजगारी की विद्यमान अवस्था –

हमारी अर्थव्यवस्था तीन क्षेत्रो मे बटी हुयी है। जिसमे रोजगार निर्माण मे आज भी प्राथमीक क्षेत्र अपना स्थान बनाये हुये है।

1) कृषी –

भारत मे आज भी रोजगार देने मे कृषी क्षेत्र की भुमीका महत्वपुर्ण बनी हुयी है। हालाकी GDP मे इस क्षेत्र का हीस्सा सिर्फ 17% है।

वर्ष	रोजगार प्रतीशत मे
1991	63.58
2000	59.65
2005	56.00
2010	51.51
2012	47.04
2014	47.000
2016	43.44
2017	42.73

स्त्रोत– आंतराष्ट्रीय श्रम संघटन, सितंबर 2018

उपरोक्त सारणी दर्शाती है की, रोजगार साल दरसाल कम होता जा रहा है। जहॉ 1991 मे 64 लोगों को रोजगार देने की क्षमता थी वह कम होकर सन 2018 तक 43 हो गयी है।

2) उद्योग क्षेत्र –

सन 1991 से लघु उद्योगों का लगातार बंद होना तथा बडे उद्योगों से मजदुरों का काम से बेदखल करने का सिलसीला अभी तक बरकरार है। निर्माण क्षेत्र मे लगभग 4.2 लाख रोजगार कम होता हुआ दिखायी देता है। AIMO के आंकडे बताते है की, देश मे नोटबंदी के बाद के दो महिनो मे व्यापार और उद्योग क्षेत्र मे पंजीकृत नौकरीयों के नुकसान की दर लगभग 55% थी। जनवरी और मार्च 2017 के बिच यह 30-40% गिर गया। जुलै–अक्टुबर 2017 तक नौकरी सृजन का दर 5%-10% गिर गया था। AIMO के राष्ट्रिय अध्यक्ष श्री. ई. के. रधुनाथन ने काहा था “की पिछले एक साल मे नये अतिरीक्त परियोजनाऐ, निवेश, स्टार्टअप की कोई महत्वपुर्ण दर नही रही है।”

3) सेवा क्षेत्र –

सेवा क्षेत्र मे भारत की जनसंख्या का 28.6% हिस्सा कार्यरत है। भारत मे 8 नवंबर 2016 की नोटबंदी तथा 1 जुलै 2017 की GST का सिधा प्रभाव सेवा क्षेत्र पर पडा है। ऑल इंडिया ट्रेड युनियन कॉग्रेस के एक सर्वेक्षण पाया गया की, भारत के 63 मिलीयन छोटे व्यवसायों मे से पाचवॉ हिस्सा याने अर्थव्यवस्था मे 32% का योगदान और 111 मिलीयन लोगों को रोजगार देता है। जहा GST लागु होने से इसमे 20% गिरावट का सामना करना पडा है। सेंटर फॉर मॉनिटरींग इंडियन इकोनॉमी, मुंबई स्थित कंसल्टेंसी के अनुमानो के मुताबीक “साल 2017 मे करीब पाच मीलीयन मजदुरोंको GST के कारण नौकरी से हाथ धोना पडा है।” अखील

भारतीय व्यापार संघ के राष्ट्रिय सचिव ने कहा की, "GST की अनुपालन और नगदी प्रवाह की समस्यायों के कारण लगभग 2,30,000 छोटे व्यवसाय बंद हो गये है।"

निष्कर्ष – भारत मे हुयी नोटबंदी तथा GST कहर ढा रही है। शुरूवात के सिर्फ 398 दिनो मे नोटबंदी 70 लाख लोगो को बेरोजगार कर गयी, तथा चार लाख करोड का नुकसान कर गयी। नोटबंदी के दिनो मे 183 नियमों मे बदलाव देखे गये तथा 122 लोगों को अपनी जान गवानी पडी।

वर्ष	बेरोजगारी % मे
2008	4.12
2010	3.54
2012	3.62
2014	3.41
2016	3.51
2017	3.52

स्त्रोत–Tradingeconomics.com

ILO की रिपोर्ट के अनुसार देश मे 18.0 बिलीयन लोग बेरोजगार है। सन 2015-16 से देश मे महिला श्रम भागीदारी गिरती जा रही है। देश मे 77% रोजगार चिंताजनक बना हुया है। ILO के आंकडोसे पता चलता है की, इस साल वैश्वीक स्तर पर 1.4 अरब लोगो के असुरक्षित रोजगार का अनुमान है। इनमे 394 मिलीयन या ¼ से अधिक अकेले भारत का हिस्सा है। नौकरीयों पर सरकार का राष्ट्रिय नमुना सर्वेक्षण 2017-18 अभी तक जारी नही कीया गया है। जनवरी–अप्रैल 2017 के दौरान लगभग 1.5 मिलीयन नौकरीयॉ खो गयी थी। इस अवधी मे अनुमानित रोजगार कुल 406 मिलीयन की तुलना मे 406.5 मिलीयन था। सेंटर फॉर मॉनिटरींग इंडियन इकोनॉमी के अनुसार नवंबर 2018 मे भारत मे संभावित बेरोजगारी की दर 8.9% रहने कि संभावना है, जो की भारत को बेरोजगारी में विश्व में नंबर एक बना सकती है। । बडे पैमाने पर बेरोजगारी का बढना भारत जैसे नौजवानो से भरे पडे देश के लीऐ तथा भारत जैसी विशाल अर्थव्यवस्था के विकास के लिए एक खतरे की और संकेत करता है।

संदर्भ ग्रंथ सुचि –

Sen A.K. (1973) - "Employment, Technology and Development", Oxford India Paperbacks.

Mathew E. T. (2006)-"Employment and unemployment in India : emerging tendencies during the post-reform period", Sage Publications New Delhi

Abraham Vinoj (2017)-"Stagnant employment growth", EPW Vol52, Issue No-38 Sep.Datta& Mahajan Ashavani (2017)-"Indian Economics"- S.Chand Publication, New Delhi.

Indianexpress.com/article 24 Dec 2018

Times of India.indiatimes.com 24 Dec 2018

www.worldmeters.info/world-papulation/india 19 Dec 2018

www.cmie.com 24 Dec 2018